क्रांति Revolution

क्रांति उस प्रक्रिया को कहते है जिसमें किसी व्यवस्था या स्थिति में औसत से काफी तेज गति से बुनियादी परिवर्तन आता है। जैसे, दार्शनिक क्रांति, औद्योगिक क्रांति, फैशन के क्षेत्र में क्रांति, हरित क्रांति। राजनीतिक क्रियाविधि की पद्धति के रूप में क्रांति की वकालत करने का अर्थ है स्थापित राजनीतिक व्यवस्था को जड़ से उखाड़ फेंकना या उसमें तेजी से बुनियादी परिवर्तन लाने की वकालत करना। राजनीतिक क्रांति उस स्थिति को कहते हैं जब राजनीतिक सत्ता में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन अचानक हो जाता है। इस प्रकार के परिवर्तन से राजनीतिक सत्ता एक व्यक्ति या समूह के हाथों से दूसरे व्यक्ति या समूह के हाथों में अप्रत्याशित तथा अवैधानिक रूप से चला जाता है। कभी-कभी किन्हीं महत्वपूर्ण कारणों से सम्पूर्ण स्थापित अर्थ व्यवस्था परिवर्तित हो जाती है और नई अर्थ-व्यवस्था का उद्भव होता है। यह आर्थिक क्रांति है। इसी प्रकार सांस्कृतिक या धार्मिक क्रांति उस स्थिति का द्योतक है जब सांस्कृतिक या धार्मिक जीवन से सम्बन्धित महत्वपूर्ण और स्थापित प्रणालियों में उल्लेखनीय परिवर्तन हो जाता है। विभिन्न राजनीतिक क्षेत्र, धार्मिक क्षेत्र, या अन्य क्षेत्र समाज के सामाजिक क्षेत्र हैं। अतः उन क्षेत्रों की क्रांतियाँ भी कभी-कभी क्रांति ही कही जाती है। अरस्तू के अनुसार क्रांति का अर्थ है संविधान में हर छोटा-बड़ा परिवर्तन। संविधान में जब पूर्ण परिवर्तन हो जाता है तो राज्य का सामाजिक आर्थिक, राजनीतिक, तथा प्रशासनिक स्वरूप पूर्णतः परिवर्तित हो जाता है। इसे पूर्ण क्रांति कहा जा सकता है। इसी तरह, जे० पी० ने 'सम्पूर्ण क्रांति' के अन्तर्गत हिंसा और तानाशाही को कोई स्थान नहीं दिया है, सम्पूर्ण क्रांति सही अर्थ में एक लोकतान्त्रिक क्रांति है। लोकतान्त्रिक तरीकों से लोकतन्त्र को और अधिक मजबूत एवं वास्तविक बनाने वाली क्रांति, जिससे स्वतन्त्रता समता और बन्धुता जैसे लोकतांत्रिक मूल्य सिर्फ संविधान के पन्नों तक सीमित न रहें, बल्कि उन्हें जीवन के हर क्षेत्र में उतार कर वास्तविक रूप दिया जा सके।

क्रांति के कई रूप हैं :

(i) आंशिक और पूर्ण क्रांति — यदि सम्पूर्ण संविधान बदल जाय या संविधानकों के महत्वपूर्ण भाग बदलें।

(ii) रक्तपूर्ण और रक्तहीन क्रांति → विद्रोह या रक्तपात द्वारा संविधान में परिवर्तन या शांतिपूर्ण ढंग से।

(iii) व्यक्तिगत या गैर-व्यक्तिगत क्रांति; यदि किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति को हटाकर संविधान में परिवर्तन हो या बिना शासक को बदले संविधान में परिवर्तन हो।

(iv) वर्ग-विशेष के विरुद्ध क्रांति – धनिक वर्ग या किसी अन्य वर्ग के विरुद्ध क्रांति करके किए जाने वाले संवैधानिक परिवर्तन।

(v) वैचारिक क्रांति; जब कोई नेता या वक्ता अपने भाषणों या शब्द-जाल के द्वारा राज्य में क्रांति लाने लाए तो वह वैचारिक क्रांति है।

क्रांति विषयक विभिन्न धारणाओं ~~का एक विशेष रूप है~~ के आधार पर उसके कुछ सामान्य लक्षणों का उल्लेख किया जा सकता है:

(i) क्रांति सामाजिक परिवर्तन का एक विशेष रूप है। हर प्रकार के परिवर्तन को क्रांति नहीं कहा जा सकता है। किसी भी क्रांति की विशेषता उसके वेग तथा क्षेत्र से होती है। क्रांति में परिवर्तन ~~एकाएक~~ तथा अचानक होता है। जैसे फ्रांस की क्रांति, रूसी क्रांति, चीन की क्रांति।

(ii) किसी सामाजिक परिवर्तन को क्रांति की संज्ञा तभी दी जाती है जब वह उल्लेखनीय या महत्वपूर्ण तथ्यों में हो। वैसे परिवर्तन किसी समूह या वर्ग या स्थापित मूल्य या परम्पराओं में होना चाहिए। जिस स्थिति को क्रांति कहा जाता है उसमें मानव तत्व एक महत्वपूर्ण कारक है। यदि आकस्मात कोई प्राकृतिक परिवर्तन या आपदा आ जाए तो क्रांति नहीं है। जैसे भूकम्प क्रांति नहीं है।

(iii) किम्बल यंग ने क्रांति की अवधारणा में राजनीतिक सत्ता में आकस्मिक परिवर्तन को आवश्यक माना है। राजनीतिक सत्ता का सम्बन्ध मनुष्य के सामाजिक जीवन से है। इसलिए यंग ने कहा है क्रांति एक ऐसा आकस्मिक, सामाजिक परिवर्तन है जो साधारणतया वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था को बलपूर्वक उलट देने से घटित होता है और जिसके फलस्वरूप सामाजिक तथा कानूनी नियन्त्रण के नये स्वरूपों की स्थापना होती है। भारत में सामाजिक आर्थिक क्रांति के जड़ में भारतीयों द्वारा अंग्रेजों से राजनीतिक सत्ता को लेना ही है।

(IV) 20th Century के प्रारम्भ में एक फ्रेंच विद्वान आर्थर बॅर (Arthur Bauer) ने शक्ति द्वारा प्रयत्न किये गये या प्राप्त किये गये सामाजिक संरचना के परिवर्तनों को क्रांति कहा है।

क्रांति के दो तथ्य है :-

(क) क्रांति सामाजिक परिवर्तन है
(ख) इसमें शक्ति का प्रयोग होता है। कभी यह सफल होता है और कभी असफल भी

क्रांति और हिंसा :→ क्रांति की अवधारणा में बाह्य हिंसा भी अनिवार्य माना जाता है, पर ऐसी बात सभी क्रांतियों में नहीं है। कई क्रांतियाँ या राजनैतिक सत्ता का हथिया लिया जाता है, जैसे टर्की में बिना किसी बाह्य हिंसा के ही सम्भव हुआ है, जैसे बिना किसी सेना के द्वारा राजनीतिक सत्ता को हथिया लेना बिना किसी रक्तपात के हुआ है। इसलिए बाह्य हिंसा सभी क्रांतियों के सामान्य तत्व है नहीं है। क्रांति बगावत नहीं है। हिंसात्मक क्रांति के विरुद्ध जे०पी० की मुख्य युक्ति यह थी कि हिंसक क्रांति में साध्य और साधन के बीच मेल नहीं रहता है। वे अहिंसक शक्ति मुख्यतः विचार परिवर्तन और जहाँ आवश्यक हो सत्याग्रह द्वारा क्रान्ति लाए जाने के पक्ष में थे। ऐसा माना जाता है कि विद्रोह असफल क्रांति है। पर दोनों में मौलिक भेद है यह है कि क्रांति का लक्ष्य सामाजिक संस्थाओं को बदलना और विद्रोह का लक्ष्य परम्परागत संस्थाओं की पुनः स्थापना।

कोई भी क्रांति असंतोष की उपज है और असंतोष कई कारकों से होता है। जैसे :-

(i) सामाजिक सांस्कृतिक कारक :- जब परिवर्तित सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति स्थापित सामाजिक संस्थाओं के द्वारा सम्भव नहीं होता तब लोगों में असंतोष फैलता है। सामाजिक संस्थाएँ रूढ़िवादी होती है। अतः एक टकराव की स्थिति पैदा होती है जो क्रांति का एक कारक है।

(ii) सामाजिक - मनोवैज्ञानिक कारक - मौलिक इच्छाओं का दमन भी क्रांति का एक कारक है। जब लोगों की आधारभूत इच्छाओं को दबाया जाता है तो एक असन्तोष की भावना पनपती है। असन्तोष ही क्रांति की जड़ में है।

(iii) आर्थिक कारक – आर्थिक कारक भी क्रांतियाँ उत्पन्न करते हैं। मार्क्स ने क्रांति का सबसे प्रमुख कारक इसे माना

मार्क्स के अनुसार क्रांति में साधन का कोई महत्व नहीं है। महत्व है केवल उद्देश्य या लक्ष्य का। इसके विपरीत गांधी जी ने लक्ष्य की अपेक्षा साधन को ही महत्वपूर्ण माना है, यदि साधन शुद्ध है तो जो परिणाम होगा वह स्वयं शुद्ध होगा।

इस प्रकार अरस्तू ने विस्तार रूप से क्रांति के कारकों तथा उसके निरोधक उपायों का वर्णन किया है। वोदां ने क्रांति के मुख्यतः तीन कारकों का उल्लेख किया है, जैसिक, प्राकृतिक तथा मानवीय।

सामाजिक क्रांति के तीन साधन हो सकते हैं:- (i) शक्ति के द्वारा (ii) विधियों के द्वारा (iii) कला के द्वारा अर्थात सत्याग्रह के द्वारा।

निष्कर्ष :